टमाटर में नये नाशीजीव कीट दक्षिणी अमेरिकी पर्ण सुरंगक (*टूटा अब्सोलुटा*) के प्रकोप के प्रति सतर्कता एवं जागरूकता

नये नाशीजीव कीट दक्षिणी अमेरिकी टमाटर के पर्ण सुरंगक (*टूटा अब्सोलुटा*) का प्रकोप उत्तर प्रदेश के भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान प्रक्षेत्र, वाराणसी एवं मिर्जापुर जिले मे किसानो की टमाटर के फसल में पहली बार जनवरी, 2017 में देखा गया। इसके पहले इन क्षेत्रों में इस नये कीट का प्रकोप टमाटर की फसल में नहीं देखा गया था।

भारत में इस कीट का प्रकोप पहली बार वर्ष 2014 में कर्नाटक एवं महाराष्ट्र में अभिलेखित किया गया था। बाद में इस कीट का प्रसार, वितरण एवं प्रकोप अन्य प्रदेशों जैसे आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, नई दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों के अलावा तत्काल में उत्तर प्रदेश में भी देखा गया है।

विश्व में यह कीट टमाटर के उत्पादन में सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभर रहा है। इस कीट से फसल की उपज व फलों की गुणवत्ता में 50 से 100 प्रतिशत तक की क्षति होती है। इस कीट की मुख्य पोषक फसलों में आलूवर्गीय सब्जियाँ (टमाटर, आलू, बैंगन) एवं दलहनी सब्जियों में भारतीय सेम है। इस परिदृश्य में इस नये कीट के प्रभावी नियंत्रण हेतु इसके क्षेत्र विस्तार, प्रकोप एवं इससे होने वाली फसल क्षति के स्तर का निर्धारण टमाटर एवं अन्य सब्जी फसलों में करना अति आवश्यक है।

क्षति की प्रकृति एवं लक्षणः

इस कीट की सूँड़ियाँ (लार्वी) फसल में क्षति पहुँचाती हैं। पत्तियों की मध्यभित्ति (मीसोफिल) ऊतकों में इस कीट के प्रकोप से सुरंग बनने के कारण धब्बे पड़ जाते हैं जो बाद में सड़ जाते हैं। इस कीट के प्रकोप से टमाटर के फलों में क्षति के लक्षण पिन–होल के रूप में दिखाई देते हैं जो बाद में द्वितीयक रोगजनकों एवं सूक्ष्मजीवों के संक्रमण के कारण सड़ जाते हैं।

इस कीट के प्रकोप व विस्तार को रोकने हेतु अनुशंसित प्रबंधन की नीतियाँः

1. पौधशाला को कीटरोधी जाल (नेट) से ढककर रखना चाहिये, जिससे कीट मुक्त स्वस्थ पौध प्राप्त हो सके।
2. रोपण हेतु कीट मुक्त पौध का प्रयोग करना चाहिये।
3. नियमित रूप से फसल का निरीक्षण (स्काउटिंग) का कार्य करना चाहिये।
4. खेत में इस नाशीजीव कीट के फेरोमोन ट्रैप्स (40 ट्रैप्स प्रति हेक्टेयर) की स्थापना करना चाहिये।
5. फसल चक्रण में आलूवर्गीय सब्जियों को नहीं अपनाना चाहिये।
6. कीट से प्रकोपित पौधों एवं फलों को खेत से हटा कर नष्ट कर देना चाहिये।
7. इस कीट के नियंत्रण हेतु अनुशंसित कीटनाशकों जैसे क्लोरनट्रानिलिप्रोल 20 एस.सी. (रैनाक्सीपायर) का 0.35 मिली. प्रति ली. या सायनट्रानिलिप्रोल 10 ओ.डी. (सायजापायर) का 1.8 मिली. प्रति ली. या इण्डोक्साकार्ब 14 एस.सी. का 1 मिली. प्रति ली. या नुवालुरान 1 ई.सी. का 1.5 मिली. प्रति ली. या लैम्डा सायलोथ्रिन 2.5 एस.सी. का 0.6 मिली. प्रति ली. या डायमेथोएट 30 ई.सी. का 2 मिली. प्रति ली. या क्वीनालफास 25 ई.सी. का 2 मिली. प्रति ली. का 10 दिन के अन्तराल पर पर्णीय छिड़काव करना चाहिये।

यदि इस कीट का प्रकोप किसी क्षेत्र विशेष में कृषि जलवायुवीय परिस्थितियों में दिखाई दे तो इसकी सूचना **"निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी"** को तुरंत भेजें।

इस कीट के प्रकोप के प्रति सतर्कता एवं जागरूकता से जुड़ी जानकारी, वैज्ञानिकों, विषय वस्तु विशेषज्ञों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों, राज्य स्तर के कृषि विभाग के अधिकारियों एवं अन्य सहभागियों हेतु इस कीट के प्रबंधन के लिये दिशा निर्देश का कार्य करेगी।

चित्र 1: टमाटर के पत्तियों में पर्ण सुरंगक कीट के क्षति के लक्षण।

चित्र 2: कीट द्वारा फलों में क्षति एवं पिन होल के लक्षण।

चित्र 3: पर्ण सुरंगक कीट की सूँड़ियाँ व प्रौढ़ शलभ।